जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष -६१ अंक - ३
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक :१००) रु०
आजीवन -१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

फाल्गुन-चैत्र : सम्वत् २०७५ वि०
मार्च– २०१९

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

श्रद्धाञ्जलि सभा

आर्य समाज कलकत्ता में १४ फरवरी २०१९ को पुलवामा में आतंकवादियों द्वारा CRPF काफिले पर किये गये नृशंस व अमानवीय हमले के प्रतिवाद में दिनांक १७ फरवरी रविवार को साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त एक श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन पूर्व प्रधान श्रीराम आर्य जी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें वक्ताओं ने पाकिस्तान प्रायोजित इस अमानवीय कुकृत्य की घोर निन्दा की तथा भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान और आतंकवादियों के विरुद्ध कठोरतम दण्डनात्मक कार्यवाही करने की माँग की । इस अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री मनीराम आर्य, पूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० देवव्रत तिवारी, पूर्व मन्त्री श्री सत्यप्रकाश जायसवाल जी ने अपनी अर्न्तवेदनाएं व्यक्त की ।

इस अवसर पर भारत के राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री को एक प्रस्ताव पारित कर भेजा गया जो इस प्रकार है ।

श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री (भारत सरकार),
७, रेस कोर्स,
नई दिल्ली - ११००११

सादर नमस्ते !

१४ फरवरी २०१९ को पुलवामा में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा CRPF जवानों के काफिले पर हुए कायराना हमले के प्रतिवाद में आर्य समाज कलकत्ता के ऐतिहासिक सभागार में कोलकाता की समस्त आर्य समाजों द्वारा रविवार १७ फरवरी २०१९ को प्रात: ११:०० बजे से एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया । जिसमें उपस्थित प्रबुद्ध वक्ताओं ने इस कायरतापूर्ण वीभत्स घटना की निंदा करते हुए अमर हुतात्माओं के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए अपने उद्‌गार एवं अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं ।

आर्य समाज इस दु:खद घड़ी में भारत सरकार द्वारा उठाये गए कदमों का पूर्ण समर्थन करता है तथा इस आतंकवाद के विरुद्ध अत्यंत कठोर, दण्डनात्मक और प्रभावी कदम उठाने की अपेक्षा करता है । यह श्रद्धांजलि सभा भारत सरकार द्वारा निम्न बिंदुओ पर अविलम्ब कार्यवाही करने की मांग करता है ।

१. भारत सरकार पाकिस्तान के विरुद्ध अविलम्ब सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर पाक अधिकृत कश्मीर को भारत में विलय करते हुए पाकिस्तान को ऐसा दण्ड दे की वह वर्षों तक भारत पर अघोषित या घोषित युद्ध करने का दुस्साहस न कर सके ।

(शेषांष पृष्ठ २८ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ६१ अंक — ३
फाल्गुन-चैत्र २०७५ वि०
दयानन्दाब्द १९४
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९
मार्च — २०१९

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सहयोगी संपादक :
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. प्रज्ञान मन का शिव संकल्प (८)	—वेद-वन्दन से	४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	—पं० लेखराम द्वारा संकलित	९
५. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद)	-पं० देवनारायण तिवारी	११
६. प्रभु सान्निध्य से प्रभु तुल्य बनें	-डा० अशोक आर्य	१३
७. विश्व को आलोक देकर ज्योति में काया मिला ली	-पं० देवनारायण तिवारी	१५
८. सूचना		१७
९. नित्य-आर्य स्वाध्याय आत्मा का भोजन	-पं० उम्मेद सिंह विशारद	१८
१०. आधुनिक भारतीय समाज की दशा तथा दिशा	-कामता प्रसाद मिश्र	२१
११. शास्त्रार्थ और शास्त्रविचार	- आर्य समाज कलकत्ता के शतवर्षीय इतिहास से	२६

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६

दूरभाष : २२४१-३४३९ *email : aryasamajkolkata@gmail.com*

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

८.

प्रज्ञान मन का शिव संकल्प

शिव संकल्प के तृतीय मन्त्र पर चिन्तन मनन प्रस्तुत है । तृतीय मन्त्र निम्न प्रकार है—

यत्प्रज्ञान मुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृतं प्रजासु ।

यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। —यजु० ३४-३

शिव संकल्प सूक्त के छः मंत्रों में प्रथम मंत्र में मन की तीव्र गति का प्रसंग आया था । मन जागते समय और स्वप्न के समय भी बड़ी तीव्र गति से दूर-दूर पहुंच जाता है, सो हे दयालु जगदीश्वर ! आपकी कृपा से ऐसा दूरगामी मन शिवसंकल्प वाला हो, अर्थात् हमारे मन में अपने लिए और संसार के अन्य प्राणियों के लिए भी सदा-सर्वदा, सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते, सब समय, कल्याण की, मंगल की भावना बनी रहे, जिससे कि हम न अपना न पराया, अकल्याण-अशिव कभी न करें, न सोचें।

दूसरे मंत्र में किसी भी कार्य सम्पादन में मन की भूमिका का प्रसंग है। विद्वान् मनीषी, धीरपुरुष जिस मन की सहायता से सारे मंगलविधायी कार्य करते हैं, वह हमारा मन प्रभु कृपा से सदा ही कल्याणकारी, अपने और पराये, सम्पूर्ण विश्व के लिए उन्नति, उत्थान का संकल्प करे, शिव-संकल्पमय बना रहे ।

अब तृतीय मंत्र में मन के एक और पक्ष का प्रसंग है । यहां मन के कई विशेषण दिये हुए हैं - (१) मनः प्रज्ञानम् अर्थात् ज्ञान का साधन, करण, उपकरण है । (२) मनः चेतः अर्थात् स्मृति का उपकरण, चेताने का साधन है । (३) मनः धृतिः अर्थात् धारणा शक्ति और धैर्य का उपकरण है । (४) मनः ज्योतिः अन्तः अर्थात् मन इन्द्रियों के कार्यों को प्रकाशित करनेवाला है । (५) मनः अमृतम् अर्थात् मन अमृत है । मृत्यु होने पर भी जीवात्मा के साथ रहता है । यहां मन के पांच विशेषणों को देकर मंत्र के द्वितीय खण्ड में कहा है —

(२) यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते - जिस मन (प्रज्ञान, धृति, चेतः, अमृत, ज्योति) के बिना, जिसकी सहायता के अभाव में कोई कार्य नहीं किया जाता । अर्थात् कुछ भी करने के लिए मन का सहयोग लेना आवश्यक है । चाहे कोई काम करें, कोई संकल्प-विकल्प, चिन्तन मनन करें, मन की क्रियाशीलता सदा आवश्यक है ।

(३) तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु - ऐसा (प्रज्ञान, चेत, धतिः आदि विशेषणों से युक्त) मेरा मन शिव संकल्प वाला हो, उसके संकल्प-विकल्प, चिन्तन-मनन में अपने लिए भी, और दूसरों के लिए भी कल्याण के भाव विचार बनें ।

अब प्रत्येक खण्ड पर विस्तार से विचार करते हैं —

(१) यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृतं प्रजासु - यहां मन का प्रथम विशेषण प्रज्ञान है । प्रज्ञान का क्या अर्थ हुआ ? महर्षि लिखते हैं 'प्रजानाति येन तद् बुद्धि स्वरूपं मनः' किसी वस्तु को प्रकृष्टता से, विशेष रूप से जानने का जो साधन है, जो बुद्धि स्वरूप है, वह प्रज्ञानमन है । थोड़ी देर के लिए मन और बुद्धि को अलग, अलग न मानकर, मन को समूहवाचक समझ लें और बुद्धि को भी ज्ञान का साधन मानना ही चाहिए। यों भी ज्ञान और बोध एक ही है । तो मन का यहां प्रथम विशेषण है प्रज्ञान - जो ज्ञान का उत्कृष्ट साधन हो । ज्ञान कब होता है ? या कैसे होता है ? सूत्र है - **'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानम्'** इन्द्रिय और अर्थ के सन्निकर्ष से, सम्पर्क से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान है । रूप का ज्ञान कब होता है, जब आंख का वस्तु से सम्पर्क होता है, रस के ज्ञान के लिए वस्तु के साथ रसना का सम्पर्क आवश्यक है । इसी प्रकार गंध के लिए नासिका का, स्पर्श के लिए त्वचा का और शब्द के ज्ञान के लिए उस वस्तु के साथ कान का सम्पर्क आवश्यक है । यहां एक विशेष ध्यान करने की बात यह है कि **'इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष' आवश्यक तो है, किन्तु पर्याप्त नहीं है ।** पर्याप्त तब होगा जब मन के साथ इन्द्रिय और मन दोनों संयुक्त रूप से अर्थ के साथ सम्पर्क करें । एक उदाहरण लेते हैं - कल्पना कीजिए कि आप अपने स्वाध्याय में पूर्णतः निमग्न हैं, कान तो खुले ही हैं किन्तु पास में लोग क्या बात कर रहे हैं, इसका आपको पता नहीं चलता, क्यों ? इसलिए कि मन स्वाध्याय में था तो कान के पर्दों से शब्द टकराकर भी मन के संयोग-सहयोग के बिना कान कुछ सुन नहीं सका । ऐसे ही आंख खुली रहने पर भी रास्ते का सांप ही नहीं, ऊंचा-नीचा, गड्ढा कुछ नहीं दिखाई पड़ता । इसी को कहते हैं **'आत्मेन्द्रियमनो युक्तम्'** आत्मा के साथ मन और मन के साथ इन्द्रिय का संयोग होने से ही कार्य होता है । कठोपनिषद् ने कहा है **'आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्ते त्याहुर्मनीषिणः'** इसी को हम यों भी कह सकते हैं कि **'आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं कर्तेत्याहुः'** कर्ता तभी हो पायेगा जब आत्मा इन्द्रिय तथा मन साथ मिलकर किसी अर्थ का सम्पर्क करें । वस्तुतः चेतन आत्मा और जड़ इन्द्रिय के मध्य प्राण एवं मन ही सम्पर्क सेतु है, भले ही मन और प्राण स्वयं भी भौतिक हैं, जड़ हैं । अतः ज्ञान का प्रकृष्ट साधन मन है । अतः मंत्र में 'प्रज्ञानं मनः' कहा गया है ।

मन्त्र के प्रथम खण्ड में मन का दूसरा विशेषण 'चेतः' है । **'यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च'**। चेतः का अर्थ है 'चेतानेहारा' अर्थात् जो चेताये, सचेत करे, कुछ भूल रहा हो तो, ध्यान से उतर रहा हो तो, ख्याल करा दे, स्मरण करा दे । इसीलिए चेतः चित्त स्मरण करने का साधन है । चित्त मन के ही एक रूप का नाम है । मन प्रायः समूहवाची है और उसी में अन्तःकरण चतुष्टय—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सबको सम्मिलित कर लिया जाता है। चेतः में 'चिती संज्ञाने' धातु है । संज्ञान कराना स्मरण कराना आदि इसके कार्य हैं ।

हम जितनी बातों-वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं, उन सभी का संज्ञान या स्मरण न आवश्यक

है, न उपयोगी । किन्तु अनेक बातें कल्याणकारी होती हैं, उनका संज्ञान-स्मृति हमारे लिए उपयोगी है । इसीलिए मन्त्र में प्रार्थना है कि मन का चेतः पक्ष शिव-संकल्पमय हो, हमारी स्मृति भी कल्याणकारी हो । जो अशिव, अकल्याणकारी हो वह चित्त से उतर जाय।

मन के प्रज्ञान और चेतः विशेषणों के पश्चात् तीसरा विशेषण धृति है । धृति का सामान्यतः अर्थ होता है धैर्य । धर्म के दस लक्षणों में धृति प्रथम लक्षण है–**''धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः''** आदि । यहाँ भी अर्थ धैर्य ही है । गोता में भगवान् श्रीकृष्ण धृति की परिभाषा निम्न रूप में कर रहे ह–

''धृत्या यया धारयते मनः प्राणेन्द्रियक्रियाः'' गीता १८-३३

धृति से मन-प्राण-इन्द्रियों की क्रियाएँ की जाती हैं जिनमें धर्म, अर्थ, काम, क्रोध, स्वप्न, भय, शोक, विषाद, मद इत्यादि का मन पर अधिकार हो जाता है । (द्र० भगवद्गीता १८.३३.३४) । स्वामी दयानन्द जी धृति का अर्थ मन की निश्चयात्मिकावृत्ति बताते हैं ।

यह मन का धृति पक्ष शिव, अशिव, धर्म, अधर्म,काम, क्रोध, भय, शोक, मद आदि सारे मानसिक व्यापारों का धारणकर्ता है । अतः इसके भी शिव संकल्प की प्रार्थना की आवश्यकता है। काम, क्रोध, भय आदि सभी शिव संकल्प युक्त हों । दुष्टों की कामना में और साधु व्यक्ति की कामना में बहुत अन्तर होता है । सज्जन-साधु व्यक्तियों के ये सारे मानसिक व्यापार शिव-कल्याणकारी ही होंगे । असाधु दुष्टों का सारा मनोव्यापार काम-क्रोध-भय आदि अशिवकारी होता है । अतः प्रार्थना है कि हमारी ये सभी वृत्तियाँ कल्याण करनेवाली हों ।

मन्त्र का अगला खण्ड है–

''यज्ज्योतिरन्तरमृतम् प्रजासु'' इसको समझने में सरलता की दृष्टि से इस प्रकार लिख लेते हैं (यन्मनः) प्रजासु अमृतं अन्तर्ज्योतिः । इसका भाव यह है कि शरीर की प्रजाओं में हमारा मन अन्तर्ज्योतिः–अन्तः प्रकाशक और अमृत है– मृत्यु रहित है । हमारे शरीर में प्रजाएँ कौन हैं? 'प्रकर्षेण जायन्ते इति प्रजाः' हमारी इन्द्रियाँ, हमारे ज्ञान के उपकरण, बहिष्करण–आँख, कान, नाक, रसना, त्वचा - ये पाँचों ज्ञान के बहिष्करण हैं और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार–ये चारों ज्ञान के अन्तःकरण हैं । इन सभी उपकरणों–साधनों की शक्ति का प्रकाश मन के योग से ही होता है। मन कहीं अन्यत्र रहे तो रास्ते की ठोकर भी नहीं दिखाई देती, रास्ते चलते ठोकर इसीलिए लगती है क्योंकि पैर चल रहे थे, और मन कहीं और था, आँखों को देखने की शक्ति देनेवाला मन आँखों से असंपृक्त होकर आँखों को प्रकाशहीन कर रहा है । इसीलिए मन्त्र कहता है कि मन अन्तःप्रकाश है । रसना किसी वस्तु को मुँह में लेकर भी मन के संयोग के बिना स्वाद का अनुभव नहीं कर पाती। हम जिस समय संस्कृत व्याकरण पढ़ते थे उस समय गुरुजनों और साथियों में एक घटना बहुचर्चित थी । काशी में एक व्याकरणाचार्य जी ने अपने भोजन के लिए उपलों कण्डों की आग में आलू बैगन भूनकर भुर्ता और लिट्टी बनायी थी । लिट्टियों की राख झाड़कर, तोड़ तोड़कर

भुर्ते की बगल में ठंडा होने के लिए थाली में एक बगल भुर्ता और एक बगल तोड़ी हुई लिट्टियाँ रख दीं । चौके में थाली के पास ही तोड़े हुए कण्डों के टुकड़े भी पड़े थे । आचार्य जी व्याकरण की किसी समस्या में ऐसे उलझ गये कि कण्डों के टुकड़े खा गये और लिट्टियाँ पड़ी रह गयीं । घटना के वर्णन में अतिरञ्जन हो सकता है, किन्तु ऐसी घटनाएँ असम्भव नहीं हैं । अत: मन्त्र में कहा गया कि मन अन्त:प्रकाश है । सभी इन्द्रियाँ मन के संयोग होने पर ही अपनी शक्ति का प्रकाश करती हैं । अतएव मन्त्र में मन को अन्तर्ज्योति: कहा गया है ।

प्रजाओं में अन्त:करण चतुष्टय—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सभी सम्मिलित हैं । यों तो इन चारों का समुदायवाची नाम 'मन' ही है, ये चारों ही मन के विभिन्न पक्ष हैं । मन का काम संकल्प विकल्प है, बुद्धि का काम समझना, सोचना, अच्छा-बुरा बताना है, चित्त का काम है चेतना, स्मरण रखना, और अहंकार का काम है अहं का भान, अपनी सत्ता का भाव रखना कि अहमस्मि, मेरी एक पृथक सत्ता है । मैं ही था जो शैशव में तालाब में खेलता था । मैं ही काठ की पट्टी लेकर स्कूल जाता था । मैं ही जीवन के विभिन्न आयामों, एक दूसरे से सर्वथा भिन्न, को पारकर आया हूँ । जीवन की अवस्थाएं बदलीं, किन्तु मैं वही हूँ । यह अहंकार का क्षेत्र है ।

अब देखना है कि मन ही इन सबका अन्त:प्रकाश है । मन कहीं और रमा हो तो बुद्धि अयथावत् प्रजानाति, बल्कि कर्तव्य अकर्तव्य के निर्णय से रहित हो जाती है । एक घटना देखिए - शकुन्तला के सामने दुर्वासा ऋषि खड़े हैं, शकुन्तला का मन दुष्यन्त में है, न आँखें ऋषि को देख पा रही हैं, न बुद्धि स्वागत, आवभगत करने रूपी कर्तव्य का निर्णय कर पा रही है। मनस्तत्त्व के पारखी कालिदास लिखते हैं—

''विचन्तयन्तो यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।''

मन अन्यत्र है—'अनन्यमानसा' तो ऋषि हों या मृगशावक या और कुछ, क्या पता चले। मन अन्यत्र हो तो चित्त भी विभ्रान्त हो जाता है। अफीम खाकर मन को कुन्द कर लिया हो तो 'अहम्' का पता ही किसे हो पाता है। अत: मन्त्र में कहा गया है कि मन इन समस्त प्रजाओं का अन्तर्ज्योति है—मन के जुड़े रहने पर ही इनके गुण प्रकाश में आते हैं अर्थात् प्रकट होते हैं—आँखों का देखना हो या कान का सुनना आदि हो, अथवा बुद्धि का ऊहापोह, निर्णयात्मक प्रज्ञान या चित्त की स्मृति-चेतना आदि हों, सभी तभी क्रियाशील होते हैं जब वे मन से संयुक्त हों, जुड़े हुए हों ।

अमृतम्मन:—इस खण्ड में मन का एक विशेषण दिया हुआ है 'अमृतम्' । मन अमृत है, अर्थात् मरणधर्मा नहीं है, मन कभी मरता नहीं है ।

हमको यह ऐसा विषय लगता है जिसमें अपनी ओर से अपने ज्ञान के आधार पर कुछ कहना कठिन है । अत: 'तत्र ऋषय: प्रमाणम्' ऋषियों ने जो लिखा है उसी को प्रमाण मानकर

हम अपना चिन्तन मनन करें । सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में स्वामी दयानन्दजी ने इस प्रकार लिखा है--

''देखो वेदान्त शारीरिक सूत्रों में **'अभावं बादरिराह ह्येवम् ।'** वेदान्त ४.४.१० ।

जो वादरि व्यास जी का पिता है, वह मुक्ति में जीव का और उसके साथ मन का भाव मानता है । अर्थात् जीव और मन का लय पराशर जी नहीं मानते, वैसे ही–

''भावं जैमिनिर्विकल्पामननात्'' वेदान्त ४.४.११

और जैमिनि आचार्य मुक्तपुरुष का मन के समान सूक्ष्म शरीर, इन्द्रियाँ, प्राण आदि को भी विद्यमान मानते है, अभाव नहीं ।

''द्वादशाहवदुभयविधं बादरायणोऽतः'' वेदान्त ४.४.१२

व्यास मुनि मुक्ति में भाव और अभाव दोनों मानते हैं । अर्थात् दोष, अविद्यादि क्लेशादि का अभाव और जीव, अन्तःकरण आनन्द, प्राण, इन्द्रियों का शुद्ध भाव रहता है अर्थात् शुद्ध सामर्थ्ययुक्त जीव मुक्ति में बना रहता है । अपवित्रता, पापाचरण, दुःख, अज्ञानादि का अभाव मानते है ।

उपनिषद् का भी प्रसंग देखने में उपयोगी होगा।

''यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह ।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ।।''

कठोपनिषद् २.६.१०

जब शुद्ध मन के साथ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है, उसको 'परमगति' अर्थात् मोक्ष कहते है। -(सत्यार्थ प्रकाश नवम समु०)

ऋषि-मुनियों की इन सम्मतियों से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि 'मन' अमर है और अन्तःकरण चतुष्टय का सामूहिक नाम 'मन' है । सो मन के साथ बुद्धि, चित्त, अहंकार, ये सब, स्थूल शरीर (अन्नमय कोश) के मर जाने के पश्चात् सूक्ष्म शरीर के साथ बने रहते है । स०प्र० नवम समुल्लास के एक और महत्वपूर्ण उद्धरण पर विचार कीजिए–

''तीन शरीर हैं–एक स्थूल जो यह दीखता है । दूसरा - (सूक्ष्म शरीर) - पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच सूक्ष्मभूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्त्वों का समुदाय 'सूक्ष्म शरीर' कहलाता है । यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं–एक 'भौतिक' अर्थात् सूक्ष्म-भूतों के अंशों से बना है । दूसरा 'स्वाभाविक' जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है । इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है ।''

यह साधना और विवेक करने का विषय है कि अन्तःकरण चतुष्टय के अमरत्व पर आस्था दृढ़ की जाय । हमारा मन कम्पूटर की तरह बहुत कुछ अपने भण्डार में सुरक्षित रख लेता है ।

–साभार: वेद-वन्दन

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में सम्वत् १८८१ में हुआ था। पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है। इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

इस स्थान पर यह बात भी वर्णन करने योग्य है कि बहुत से लोग जो सूर्यग्रहण के समीप वहां आये हुए थे, परन्तु सूर्यग्रहण का ज्ञान न होने के कारण दोपहर के तीन बजे तक न तो उन्होंने किसी ने स्नान किया और न भोजन पाया। तत्पश्चात् जब सब स्नान करके भोजन पाने लगे तो सूर्यग्रहण पड़ना आरम्भ हो गया। उस समय मैं महाराज के पास बैठा था। भंगी लोग इस प्रकार पुकारने लगे 'दान करिये, ग्रहण पड़े हैं' यह सुनकर और निरीक्षण करके महाराज जोर से हंसे और कहने लगे, 'सोचते नहीं हैं उस समय तो भोजन न पाया और ठीक ग्रहण के समय भोजन करने लगे' देखो इनकी विलक्षण गति है।'

श्रेष्ठता शुभ कर्मों से है परन्तु संस्कार अवश्य होना चाहिए – दूसरी बार स्वामी जी मुझे फागुन बदि १३, संवत् १९२४ तदनुसार २१ फरवरी, सन् १८६८ को कर्णवास में मिले। पहुँच कर क्या देखता हूँ कि आप दो चार ठाकुरों और वैश्यों के लड़कों के उपनयन संस्कार कराने का प्रयत्न कर रहे हैं। मैंने जाकर नमस्कार किया और यज्ञोपवीत के विषय में—जिसका कराना मुझे भी स्वीकार था, प्रश्न किया।

प्रश्न — महाराज यदि यज्ञोपवीत न हो तो क्या हानि है ? स्वामी जी ने उत्तर दिया - कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का उपनयन संस्कार होना अवश्य है क्योंकि जब तक उपनयन संस्कार नहीं होता मनुष्य को वैदिक कर्म करने का अधिकार नहीं होता।

प्रश्न — एक व्यक्ति उपनयन संस्कार तो करा ले परन्तु शुभ कर्म न करे और दूसरा उपनयन संस्कार न करावे और सत्यभाषणादि कर्मों में तत्पर हो तो उन दोनों में कौन श्रेष्ठ है ?

स्वामी जी ने उत्तर दिया - कि **श्रेष्ठ वह जो उत्तम कर्म करता है** परन्तु संस्कार होना आवश्यक है; **क्योंकि संस्कार न होना वेदशास्त्रों के विरुद्ध ह** और जो वेद शास्त्र के विपरीत करता है वह ईश्वरीय आज्ञा को नहीं मानता और ईश्वराज्ञा को न मानना मानो नास्तिक होने का लक्षण है ।

यज्ञोपवीत, संध्या, बलिवैश्वदेव आदि का विशेषतया उपदेश - पण्डित बलदेव जी गौड़,

ब्राह्मण डिबाई निवासी ने वर्णन किया कि स्वामी जी जब राजघाट या रामघाट की ओर से भादों बदि दशमी, संवत् १९२४ तदनुसार २४ अगस्त सन् १८६७ को कर्णवास में आये, तब मैं गंगास्नान के दूधलीला के मेले पर गया था और मेले से निबट कर जब मैं ग्राम की ओर आने लगा तब वहाँ पर मुझे पण्डित टीकाराम जी गुरु कर्णवास निवासी ने कहा कि एक बड़े विद्वान आये हैं जो कृष्णानन्द सरस्वती गुजराती ब्राह्मण बांदा निवासी से भी बहुत विद्वान हैं, केवल संस्कृत बोलते हैं । मैं उनके मुख से स्वामी जी की प्रसंसा सुनकर उनके दर्शन को गया । वह उस समय पक्के घाट पर बसेन्दु के पेड़ के नीचे टिके थे । मैंने जाकर प्रणाम किया, वह संस्कृत बोलते थे, कोई वस्त्र नहीं था; केवल एक लंगोटी थी परन्तु वह वैरागी लोगों की भाँति न थी; प्रत्युत ५ गज लम्बी और ६ गिरह चौड़ी थी । गंगारज शिर पर तो लगाते थे परन्तु माथे पर नहीं । स्वामी जी ने मुझ से संस्कृत में पूछा कि तुम कहाँ के रहने वाले हो ? मैंने कहा कि डिबाई का । फिर पूछा कि तुम कौन हो ? मैंने कहा कि गौड़ ब्राह्मण हूँ । फिर पूछा कि संध्या करते हो या नहीं ? मैंने कहा कि महाराज संध्या करता हूँ और गायत्री का जप भी करता हूँ । तब उन्होंने कहा 'समीचीनम् ।' बलिवैश्वदेव (यज्ञ) करते हो या नहीं ? मैंने कहा कि चावल और घृत से करता हूँ । कहने लगे कि अच्छा हम तुमको बलिवैश्वदेव (यज्ञ) की विधि लिख देंगे । उन दिनों महाराज जी का उपदेश यज्ञोपवीत, संध्या, बलिवैश्वदेव आदिक का अधिक था और यह भी उस समय कहते थे तीनों वर्णों की गायत्री एक ही है । मैंने कहा कि यह ब्राह्मण लोग तो तीनो वर्णों की पृथक्-पृथक् बतलाते हैं । कहने लगे कि यह 'गप्पाष्टक' है । (यह शब्द उस समय पोप के स्थान पर प्रयुक्त करते थे) ।

नंगे शरीर पर मिट्टी के लेप से लाभ - उस बार स्वामी जी दशमी के दिन वहाँ आकर उदासी की कुटी में रात को रहे थे । वह उदासी उनकी बहुत सेवा करता था । स्वामी जी रात को भी वस्त्र नहीं ओढ़ते थे, फूस कुछ टाँगों पर और कुछ पेट पर डाल लेते थे । तीन बजे से पांच बजे तक समाधि लगाते थे । फिर उसी समय बाहर शैच को जाते परन्तु कोई पात्र न ले जाते । वहाँ गंगातट पर ही सब काम कर आते थे । वही लंगोटी धोकर सुखा लेते परन्तु एकान्त स्थान में जाकर नहाते और शरीर पर अच्छी प्रकार मृत्तिका लगाकर चले आते थे । मैंने पूछा कि महाराज ! आप इतनी मृतिका क्यों लगाते हैं ? कहने लगे वायु प्रवेश नहीं होता, शरीर नीरोग रहता है । उस समय भी सैकड़ों मनुष्य आते थे। जब उसके दूसरे दिन मूर्तिपूजन और पुराणादि का खंडन आरम्भ किया तो हमने पूछा कि महाराज सत्य क्या होगा ? स्वामी जी बोले महाभारत, वाल्मीकि रामायण, मनु, वेद यह सत्य हैं, और सब 'गप्पं वर्तते'। फिर वहाँ से मैं चला आया । पीछे सुना कि वह अनूपशहर चले गये और अनूपशहर के पण्डित अंबादत्त से उनकी वार्ता हुई । जिसपर उन्होंने स्वामी जी की बहुत प्रशंसा की और कहा कि ऐसा विद्वान पण्डित कोई आज कल दिखाई नहीं देता, और उस समय अंबादत्त का पुत्र गुरुदत्त अनका आज्ञावर्ती हुआ । जब दूसरी बार स्वामी जी कर्णवास आये तब झन्नालाल, सदासुख, कल्लू आदि वैश्यों और ठाकुर लक्षमनसिंह आदि राजपूतों - कुल लगभग १२ मनुष्यों के यज्ञोपवीत हुए । इसी बार कहा कि महाभारत में युद्धपर्व और भीष्मोपदेश के अतिरिक्त और बहुत स्थानों पर गप्प है और मनुस्मृति और रामायण में भी गप्प है ।

क्रमशः .....

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'
मो0 : 9830420496

द्वितीय समुल्लासारम्भः

(३)

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामः

(उपक्रमणिका)

जिस भांति माँ हित चाहती है और देती प्रेम है ।
वैसा न कोई अन्य करता यह जगत् का नेम है ।।
इस हेतु जिसकी माँ पढ़ी हो और हो वह धार्मिकी ।
समझो उसी की माँ जगत् में है, वही है मार्मिकी ।।३।।

माता वही है धन्य जो अच्छी करे संतान को ।
निज गर्भसे ही ज्ञान दे संस्कारित करे संतान को ।।
जब तक न विद्या पूर्ण हो तब तक सिखावे धर्मता ।
उपदेश देवे नम्रता का औ बतावे सभ्यता ।।४।।

माता-पिता को उचित है पालें स्वयं आचार को ।
निज देंह की उन्नति करें, धारण करें सुविचार को ।।
अर्थात् गर्भाधान के ही पूर्व से पालें नियम ।
संयम रखें मन-चित्त पर, परमात्मा का साध यम ।।५।।

जो बुद्धिनाशक वस्तु हों, जिनसे घटे आरोग्यता ।
अर्थात् जिनसे सत्व विगड़ें, त्याग दें वह सर्वदा ।।
जैसे कि मादक द्रव्य या मद्यादि हो जिनमें नशा-
दुर्गन्ध युत्त आहार रूखे जो बिगाड़े तन-दशा-।।६।।

सेवन कदापि करें न उनका, वीर्य जिनसे हो विषम ।
निर्दोष होवें तत्व तनके, वह करें संयम नियम ।।
बल, बुद्धि और सुशीलता आरोग्यता जिनसे मिले ।
हो शान्त आत्मा और मन जिनसे पराक्रम तन-मन खिले।।७।।

उस भांति के आहार लें जैसे कि घृत-पय मिष्ट हो ।
फल आदि मेवे शुद्ध मधु आहार उत्तम इष्ट हो ।।
अतएव अति उत्तम और गुणयुक्त ही भोजन करें ।
फिर ध्यान भी प्रभु का करें, उसके सुभग गुण तन-भरें ।।८।।

रज-वीर्य हो निर्दोष, तब संतान होती हैं विरुज ।
दम्पति रहें भी स्वस्थ, तन में व्याप्त हो कोई न रुज ।।
ऋतु काल में तज चार दिन, नारी करे स्नान तब ।
हो अन्यथा रज भी विषम, ऋतुधर्म भी होवे विषम ।।९।।

पुत्रेष्टि कर्म करें तभी, जब मुदित मन हों दम्पती ।
सन्तान तब पायें सुभग धार्मिक और उत्तम मती ।।
पर चार दिन ऋतुकाल के होते नहीं उपयुक्त हैं ।
कारण कि इससे रोग बढ़ता, इसलिए वे त्यक्त हैं ।।१०।।

पञ्चम दिवस से मात्र ग्यारह रात्रियाँ ही भोग्य हैं
आधान करने के लिए वे शास्त्र सम्मत योग्य हैं ।।
जिस दिन पड़े एकादशी या हो त्रयोदशवीं निशा ।
वह रात्रि भी वर्जित किया है शास्त्र, मानें यह दिशा ।।११।।

हो जाय गर्भाधान जब तब त्याग दें उस कर्म को ।
फ़िर एक सम्वत् तक रखें संयम, समझ कर मर्म को ।।
जिस दिन परस्पर प्रेम हो, हो चित्त प्रमुदित उभय का ।
राखें न मन आवसाद युत गुण-गाण गाये ब्रह्म का ।।१२।।

क्रमशः .....

प्रभु सान्निध्य से प्रभु तुल्य बनें

–डा० अशोक आर्य

प्रभु की निकटता पा लेने पर हमारा भय दूर होगा । सब प्रकार के धन एश्वर्यों के हम स्वामी बन जावेंगे । सब प्रकार का सुख-वैभव तथा आनन्द हमें मिलेगा तथा हम प्रभु के ही समान दीप्त हो जावेंगे। इस बात को यह मन्त्र इस प्रकार प्रकट कर रहा है :-

इन्द्रेणसंहिदृक्षसेसंजग्मानोअबिभ्युषा ।

मन्दूसमानवर्चसा ।। ऋ० १.६.७

यह मन्त्र चार बातों को इंगित करते हुए कहता है, उपदेश करता है कि :

१. प्रभु के समीप रह ऐश्वर्यों के स्वामी बनें

हे मानव निरन्तर प्रभु स्तवन कर, पिता का स्मरण कर, उसका कीर्तन कर तथा उसकी समीपता प्राप्त कर । तू उस भय रहित, उस परम एश्वर्यशाली प्रभु के मेल को प्राप्त होगा तथा उसकी निकटता पाते हुए हे प्राणी ! तू निश्चय से ही उसकी उपासना से, उसकी निकटता से उन्नत होते हुए निरन्तर आगे ही बढ़ता जाता है ।

हम जिस पिता के आराधक है, वह पिता सब प्रकार के भय से, सब प्रकार के डर से रहित होता है । जब हमारा पिता ही भयभीत नहीं होता तो उसके निकट रहने के कारण हमें भी किसी प्रकार का भय सता नहीं सकता । हम भी भय से रहित हो जाते हैं । वह तो भय के लवलेश से भी रहित होता है । उसे किंचित सा भय भी नहीं होता । वह पिता परमेश्वर्यशाली होता है, सब प्रकार के एश्वर्यों का स्वामी होता है । उसकी निकटता के कारण हम भी एश्वर्यों के स्वामी बनते हैं । यह सैब उस प्रभु के समीप स्थान पाने से होता है, यह मेल उसकी उपासना का ही परिणाम होता है । जब हम उस पिता से मेल कर लेते हैं, उससे निकटता पा लेते हैं तो हम भी आगे बढ़ने लगते हैं तथा उन्नत होने के अधिकारी बन जाते हैं ।

२. प्रभु के निकट रह भय मुक्त हों

यह एक स्वाभाविक नियम है कि जिसका साथी भय रहित होता है, उसके सान्निध्य के कारण वह भी सब प्रकार के प्रकार के डर से मुक्त हो जाता है । यह भी सत्य है कि जिसका मित्र सब प्रकार के एश्वर्यों का स्वामी होता है उसका यह साथी भी एश्वर्यों को प्राप्त करने में सशक्त हो जाता है । इसलिए हे प्राणी ! तू उस प्रभु का सान्निध्य प्राप्त कर, उस प्रभु का गुणगान कर, उसकी उपासना और उसका कीर्तन कर ताकि तू भी उस प्रभु के ही समान भय से मुक्त हो जावे तथा धन एशवर्य से सम्पन्न हो जावे ।

३. प्रभु गुणगान से आनंद प्राप्ति

हम जानते हैं कि निर्भय व्यक्ति सदा आनन्दित रहता है । जो आनन्दित रहता है, वह ही धन व एश्वर्य का स्वामी हो सकता है, अधिकारी हो सकता है, अन्य नहीं । हम यह भी जानते हैं कि हमारा वह पिता कभी भयभीत नहीं होता । वह तो है ही भय रहित । वह प्रभु सदा आनन्दमय ही रहता है क्योंकि वह भय से रहित है । वह परमपिता सदा आनन्दमय होता है इसलिए वह एश्वर्य से भरा रहता है । जब हम उस पिता के निकट जा कर उस का चिन्तन करते हैं तो हम भी भय से दूर हो जाते हैं, भय से रहित हो जाते हैं । भय रहित होने से हमारा जीवन भी आनन्द से भर जाता है तथा हम भी आनन्द से सम्पन्न हो कर अनेक प्रकार के धन एश्वर्यों को पाने में सक्षम हो जाते हैं, अनेक प्रकार के एश्वर्यों को पाकर सुखी हो जाते हैं । इसलिए सुख के अभिलाषी प्राणी को सदा प्रभु के समीप जाकर उस का गुणगान करना चाहिये ।

४. प्रभु स्तवन से दीप्ती

जब हम प्रभु की निकटता पाने में सफल हो जाते हैं तो जिस प्रकार वह प्रभु दीप्ति से भरपूर दिखाई देता है, उस प्रकार हम भी दीप्त ही दिखाई देते हैं । प्रभु की आभा तथा हमारे मुख मण्डल की आभा, चमक, दीप्ति एक समान ही दिखाई देती है । जिस प्रकार एक यज्ञकर्ता, एक होता, एक यज्ञमान, जब यज्ञ कर रहा होता है, अग्नि के सम्मुख बैठा होता है, उस समय उसकी आभा, उसका मुख मण्डल भी अग्नि का सा ही हो जाता है । जैसा तेज अग्नि का होता है, यज्ञकर्ता भी वैसा ही दिखाई देता है । इस प्रकार अग्नि व उस अग्नि का उपासक दोनों ही समतुल्य दीप्ति वाले दिखाई देते हैं । इस प्रकार ही जब हम उस पिता के समीप आसन लगा लेते हैं तो हम भी उस पिता के से ही तेज वाले बन जाते हैं ।

यदि वेदान्त दर्शन की मानें तो हम इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रभु का सान्निध्य पाने से, उसकी निकटता पाने से प्रभु के निकट जाने वाले प्राणी में भी वैसे ही गुण आने लगते हैं, जैसे उस प्रभु में होते हैं । इस प्रकार वह भी परमात्मा जैसा ही बन जाता है । बस अब प्रभु में ओर जीव में यह अन्तर ही रह जाता है कि प्रभु तो सृष्टि का निमार्ण कर सकता है किन्तु जीव यह कार्य नहीं कर सकता क्योंकि सृष्टि के निर्माता होने के लिए उसका निराकार होना तथा सर्वशक्तिमान होना आवश्यक होता है, जो यह गुण है वह जीव कभी प्राप्त नहीं कर सकता । अन्य गुणों में वह प्रभु के बहुत निकट चला जाता है ।

१/६१ रामप्रस्थ ग्रीन वैशाली
जिला - गाजियाबाद, उ. प्र.
चलवार्ता- 09718528068

महर्षि दयानन्द के प्रति

विश्व को आलोक देकर ज्योति में काया मिला ली

–पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'

शिव अर्चना से हो विमुख मुख मोड़कर वह उठ गया ।
उस मूलशंकर के हृदय में भाव जागा इक नया ।।१।।

''यह हो न सकता ''सत्य-शिव'' पाखण्ड का यह जाल है।
तम में पड़ा क्यों जबकि शशि-भूषित स्वयं का भाल है।।२।।

कैसा त्रिलोकीनाथ जड़ बनकर अँधेरे में पड़ा ।
उत्पात् सहता मूषकों का इस शिवालय में जड़ा ।।३।।

लगती कथा वह झूठ है दिन में सुनी जो चाव से ।
क्या भावना की कल्पना थी ? मात्र कल्पित भाव से ।।४।।

पाखण्डमय झूठी गढ़ी है, बोध होता है यही ।
कोई न बात खरी हुई, सब जल्पना लगती सही ।।५।।

यह सोचकर झट उठ पड़ा वह शिव-व्रती मुख मोड़कर ।
माता-पिता घरबार तज, निष्ठुर अमोही छोड़कर ।।६।।

अब चल पड़ा अपनी डगर पर सत्य-शिव को खोजने ।
बहु गुरु मिलें पर छद्मवेशी, सत्य-पथ से रोकने ।।७।।

सौभाग्य से मथुरा नगर में गुरु मिले, हुलसा हिया ।
कर प्राप्त विद्या, दक्षिणा में लौंग कुछ अर्पित किया ।।८।।

पर क्या पता था विश्व को, जीवन बना इस भांति है ।
तम कर दिया जो क्षार भूतल का, खिला अवदात है ।।९।।
यह जग न सकता आँक जो ज्वाला खिली है देह में ।
पावन ऋचाओं का किया जैसा उजाला विश्व में ।।१०।।

पीकर स्वयं विष, अमृत का अवदान ऋषि तुमने दिया ।
गढ़ ढह गये पाखण्ड के, ऐसा प्रहार घना किया ।।११।।

वैदिक ध्वजा की शरण आकर पन्थ-मत सब झुक गये ;
तब तर्क की लखकर समीक्षा ठिठुर कर सब रह गये।।१२।।

नव कोंपलें तुमने उगा दीं शुष्क तरु-से देश में ।
श्रुति-ज्योति लेकर सत्य का सूरज उगा नव वेश में।।१३।।

उर तिमिर भागा मानवों का ज्ञान का पाकर दिया ।
आक्षितिज व्यापा विश्व में उपकार जो तुमने किया।।१४।।

''**निर्भीक**'' होकर आर्यजाति जगी, तुम्हारा बल मिला।
तेरे बताये ज्ञान से, सबको सबल सम्बल मिला ।।१५।।

ऋषिवर ! कृतार्थ समग्र भूमण्डल त्वदीयोपकार से ।
युग-युग रहेगा जग ऋणी तव ज्ञान के भण्डार से ।।१६।।

आर्य समाज कलकत्ता
१९, बिधान सरणी
कोलकाता ७००००६
मो० 9830420696

महर्षि महिमा पर्व

कोलकाता एवं हावड़ा की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान व आर्य समाज कलकत्ता के संयोजकत्व में आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में फाल्गुन कृष्ण दशमी से फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तदनुसार १ मार्च से ४ मार्च २०१९ पर्यन्त **'महर्षि महिमा पर्व'** का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व सुयोग्य वैदिक विद्वान् डा० विनय विद्यालंकार ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की । बुलन्दशहर से पधारे हुए भजनोपदेशक श्री ओमवीर आर्य ने भी अपनी सेवाएं प्रदान की ।

१ मार्च को सायं ६.३० बजे से यज्ञ के उपरान्त महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जन्म जयन्ती मनाई गयी । २ मार्च व ३ मार्च को महर्षि स्वामी दयानन्द जी के कार्यों व समाज पर उसके प्रभाव की विस्तृत रूप से आचार्य डा० विनय विद्यालंकार जी ने चर्चा की । ४ मार्च को सायं ४.३० बजे से आर्य समाज कलकत्ता के छत पर बहुकुण्डीय पारिवारिक यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें कोलकाता एवं अंचल के आर्य परिवार अपने-अपने यज्ञ कुण्ड व यज्ञ सामग्री के साथ उपस्थित हुए । तदुपरान्त आयोजित सभा में विभिन्न वक्ताओं ने ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये । भजनोपदेशक श्री ओमवीर आर्य व श्रीमती सुषमा गोयल के भजन के उपरान्त आचार्य राहुल देव शास्त्री, पं० वेदभानु शास्त्री तथा आचार्य डा० विनय विद्यालंकार जी ने इस अवसर पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के अन्त में प्रीतिभोज का भी आयोजन हुआ ।

देवघर पुस्तक मेले में आर्य साहित्य का प्रचार

देवघर में आयोजित पुस्तक मेला दिनांक ११ जनवरी से ३० जनवरी २०१९, स्थान - आर मित्रा स्कूल में पहली बार आर्य समाज का स्टाल नं ३६, हाल नं- १ में आर्य समाज कलकत्ता, आर्य समाज बड़ाबाजार, आर्य समाज आसनसोल, आर्य समाज हावड़ा के सहयोग से लगाया गया। पुस्तक मेले में रु० ३५००० मूल्य का आर्य साहित्य का प्रचार हुआ । गुरुकुल गौतमनगर के विद्यार्थी श्री भवेशजी एवं उनके साथियों ने और आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के मंत्री श्री पूरनचंद जी आर्य ने प्रचार में सहयोग किया । श्री घनश्याम जी शर्मा ने १० दिन तक लगातार स्टाल पर रहकर पूर्ण सहयोग किया ।

मंत्री

दि०- ०९-०२-२०१९ **आर्य समाज कलकत्ता**

मालदा पुस्तक मेले में आर्य साहित्य का प्रचार

मालदा टाउन में आयोजित पुस्तक मेला दिनांक १६ जनवरी से २३ जनवरी २०११ स्थान सदर घाट बड़ा शिव मंदिर में आर्य समाज कलकत्ता, आर्य समाज बड़ाबाजार, आर्य समाज आसनसोल, आर्य समाज हावड़ा के सहयोग से स्टाल न १४० मालदा में पहली बार पुस्तक मेले में आर्य समाज का स्टाल लगाया गया । लगभग रु० ११००० मूल्य की आर्य साहित्य का प्रचार हुआ। मेले में सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ये तीनों पुस्तकें तीन दिन पहले ही समाप्त हो गयी । बांग्ला भाषा में आर्य साहित्य की ज्यादा मांग रही । पुस्तक मेले में मालदा आर्य समाज के सभी सदस्यों का सहयोग रहा । विशेषकर निहारमंडल, बिप्लब मंडल का सहयोग रहा ।

मंत्री

दि०- १०-०२-२०१९ **आर्य समाज कलकत्ता**

नित्य-आर्ष स्वाध्याय आत्मा का भोजन

–पं० उम्मेद सिंह विशारद

स्वाध्यायात मा प्रमद: । स्वाध्याय द्वारा योग्यता बढ़ाने मे प्रमाद मत कर

जगत गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे लिखते हैं -

स्वध्यायेत व्रतेहोमिस्यैविद्येनेज्ययसुतै:।

महायज्ञैश्च यजैश्च ब्राह्मीय क्रियते तुन:।। (मनु:)

अर्थात: सकल विद्या पढ़ते पढ़ाते ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि नियम पालने अग्निहोत्रदि होम, सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग और सत्य विद्याओं का (स्वाध्याय-) दान देने वेदस्थ कर्मोपासना ज्ञान विद्या का ग्रहण करने ब्रह्मदेव पितृवैश्यदेव और अतिथियों के सेवन रूप पन्चमहायज्ञ और अग्निष्टोमादि तथा शिल्पविद्याविनादि यज्ञों के सेवन से इस शरीर को ब्राहम्मी अर्थात वेद और परमेश्वर की भक्ति का अधाररूप ब्राह्मण का शरीर बनता है । इन साधनों के बिना ब्राह्मण शरीर नहीं बन सकता ।

स्वाध्याय क्यों और कैसे

जिस आर्ष ज्ञान के द्वारा मनुष्य को सर्वोतोमुखी प्रगति और सब प्रकार की सुख शान्ति प्राप्त हो, वह ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त करना चाहिए । वह ज्ञान स्वाध्याय और सत्संग द्वारा प्राप्त होता है। आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनुष्य का मानसिक उच्च संस्कार हो जाता है । उसकी वृद्धि सृष्टिक्रमानुसार ज्ञान विज्ञान में प्रखर हो उठती हैं स्वाध्याय के बिना उच्च ज्ञान प्रप्त नहीं हो सकता, जो स्कूल में प्राप्त नहीं हो सकता है । जो स्वयं नित्य नियमपूर्वक आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करता है उसे ही वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है ।

नित्य स्वाध्याय की जिज्ञासा जगाइये और अपना ज्ञान भण्डार भरिये ।

नित स्वाध्याय की जिज्ञासा मानव जीवन के विकास का बहुत बड़ा आधार है । जो जिज्ञासु है और जानने को उत्सुक है वही ज्ञान भी प्राप्त करेगा । जिज्ञासा में स्वयं अपनी एक ज्ञान शक्ति होगी। ज्यों-ज्यों जिज्ञासा गहरी होती रहती है, ज्ञान भी बढ़ता रहता है । मनुष्य अपनी जिज्ञासा वृति से ही दाशर्निक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं ईश्वर भक्त अन्वेषक बनता है ।

प्रत्येक समाधान स्वाध्याय से

जिज्ञासाओं और प्रत्येक अज्ञान के निर्माण का माध्यम स्वाध्याय से होता है । आर्ष शास्त्रों का स्वाध्याय ही उपयुक्त माना गया है । और स्वाध्याय को मानव के धर्म कृत्यों में सम्मलित किया गया है और निरन्तर तत्परता से दैनिक दिनचर्या में सम्मलित किया गया है । स्वाध्याय को तो दिन रात कभी भी करने की छूट देकर शास्त्रकारों ने उसका महत्व स्वीकार किया है । स्पष्ट है स्वाध्याय द्वारा मनुष्य

का इतना हित हो सकता है, जितना कि धनधान्य सहित धरती से भी सम्भव नहीं है ।

स्वाध्याय की उपेक्षा न करें ।

आज मनुष्य जितनी प्रगति कर सका है उसके महत्वपूर्ण आधारों में से एक बौद्धिक सम्प्रदा आधार स्वाध्याय ही है ज्ञान हीन मनुष्य आजीवन पशुओं की तरह ही अनपढ़ संशययुक्त जीवन जीता है । ज्ञान की जन्मदात्री मनुष्य की विवेक बुद्धि को ही माना गया है । मनुष्य को आध्यात्मिक व वैज्ञानिक शक्ति प्राप्त करने के लिये नित्य स्वाध्याय आवश्यक है । ज्ञान का आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करने का यथार्थ अर्थ विचारों को उपयुक्त दिशा में विकसित करना ही है ।

वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों का चयन नियमित स्वाध्याय में करें ।

वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों का चयन इसलिये आवश्यक है कि उनका ज्ञान सृष्टिक्रमानुसार वैज्ञानिक, व सत्य के आधार पर होता है । नित्य स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है । स्वाध्याय एक प्रकार की साधना है जो अपने साधक को सिद्धि के द्वार तक पहुँचाती है । स्वाध्याय के अभाव में पढ़ी हुई विद्या भी विस्मृत हो जाती हैं प्रतिदिन स्वाध्याय करने वाले अपने ज्ञान कोष में बूंद-बूंद इकट्ठा करके उसे अक्षम बना लिया करते हैं । वर्तमान में साहित्य अर्थात अनार्ष साहित्य के द्वारा मानव जगत को भ्रमित किया जा रहा है जिसका दुष्परिणाम प्रत्यक्ष है । जितना पथ भ्रष्ठ मानव जगत को अनार्ष ज्ञान की पुस्तकें कर रही हैं उतना ही उसका आध्यात्मिक जीवन भी नष्ट हो रहा है इसलिये वेदानुकूल ग्रन्थों का ही स्वाध्याय नित्य करें ।

सम्पूर्ण प्रगति का मूल आधार सत्य ज्ञान

सत्य का कहना बहुत कठिन है, सुनना उससे भी कठिन है, और सत्य सुन कर उस पर चलना और भी कठिन हैं परन्तु सत्य से बढ़कर कोई और हितकारी पदार्थ नहीं है । सत्य ज्ञान सत ग्रन्थों के स्वाध्याय से मिलता है ईश्वर के कार्य ऋत सत्य है । और ऋत सत्य का ज्ञान वेद और वेदानुकूल शास्त्रों के स्वाध्याय से प्राप्त होता है । सत्य ज्ञान व्यक्ति को शीलवान शिष्ट और विनम्र बनाता है। और इन गुणों के परिणाम से समाज में सम्मान और सहयोग मिलता है । ज्ञान की महिमा अपार है । ज्ञान की कृपा से सामान्य व्यक्ति भी महापुरूष बन जाता है । संसार में जितने भी महापुरुष और प्रतिभा प्रधान व्यक्ति हुए हैं, वह सत्य ज्ञान के आधार पर ही उच्च स्तर पर पहुँचे हैं । आत्मा का क्षेत्र विशुद्ध रूप से ज्ञान का क्षेत्र है। और आत्मा का क्षेत्र उसके लिये ही खुलता है । उसके गुण कर्म स्वभाव का क्षेत्र उसके सत्य ज्ञान के आधार पर होता है ।

स्वाध्याय का मूल प्रयोजन आत्मा का शिक्षण

शास्त्रों की तीन प्रमुख आज्ञाऐ हैं । सत्यम वेद-धर्म चर-तथा स्वाध्याय मा प्रमद: अर्थात सत्य बोले,

धर्माचरण करे और स्वाध्याय में प्रमाद न करें । इस निर्धारण के अनुसार सत्य और धर्म के ही समकक्ष स्वाध्याय को ही प्रमुखता दी गई हैं सत्य और धर्म के बारे में सभी जानते हैं, भले ही उनका परिपालन न करते हो । किन्तु स्वाध्याय के सम्बन्ध में बहुत कम लोग समझते है कि ऋत सत्य-सत्य-धर्म का आधार ज्ञान प्राप्ति का साधन केवल केवल स्वाध्याय और सत्य सत्संग होता है ।

स्वाध्यायाद यागमासीत योगात स्वाध्यायमामानेत ।

स्वाध्याय-योग-समपत्या परमात्मा प्रकाशते- । (योगशास्त्र)

अर्थात: स्वाध्याय से योग की उपासना करे और योग से स्वाध्याय का अभ्यास करें । स्वाध्याय की सम्यक्ति से परमात्मा का साक्षात्कार अर्थात आभास होता है ।

ज्ञानवानुदितानन्दो कवचिंत्परिमर्नति (योग व०)

अर्थात् ज्ञानी ही परम आनन्द प्राप्त करता है वही पार होता है ।

यथा यथा हि पुरूष शास्त्र समाधि गच्छिति ।

तथा तथा विज्ञानाति विज्ञान चास्य रोचते ।। मनु ।।

अर्थात: जैसे-जैसे मनुष्य शास्त्रों का स्वाध्याय करता है, वैसे-वैसे उसकी ज्ञान क्षमता बढ़ती जाती है । जैसे सूर्य के उदय होने से कमल रत्न विकसित है और स्वाध्याय से बुद्धि का विकास होता है ।

ज्ञानमेव परं ब्रह्मज्ञानं बंधाय चेष्यते ।

ज्ञानात्मकमिंद विश्व न ज्ञानादविद्यते परम ।। (यो० व०)

अर्थात् ज्ञान से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है, और विपरीत ज्ञान से ही बन्धन बांधते है, इस संसार में जो कुछ है, ज्ञानात्मक ही है । ज्ञान से परे कुद भी नही है ।

-निवेदन-

स्वाध्याय और सत्संग का विषय प्राचीन काल से ही आत्म विश्लेषण और और आत्म निर्माण ही हुआ करता था, गुरूजन इसी विषय की दीक्षा दिया करते थे । मानव जीवन को सुखी समुन्नत और संस्कारी बनाने के लिये सदग्रन्थों का स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है । स्वाध्याय मानव जीवन का सच्चा सुहृदय एवं आत्मा का भोजन है । हमें आलस्य प्रमाद छोड़कर प्रात: सायं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय करने की नित्य आदत डालनी होगी । और जो मानव अपने दैनिक दिनचर्या में नित्य स्वाध्याय करते हैं वह साधुवाद के पात्र हैं ।

वैदिक प्रचारक

गढ़ निवास, मोहकमपुर

देहरादून, उत्तराखण्ड

मो०- 9411512019/9557641800

आधुनिक भारतीय समाज की दशा तथा दिशा

-कामता प्रसाद मिश्र

आधुनिक भारत बहुमुखी विकास की ओर त्वरित गति से अग्रसर है । भारत एक विकासशील देश है जो विकसित देश बनने के कुछ ही दूर है । अभिनव भारत अर्थव्यवस्था, सैन्यशक्ति तथा औद्योगिक क्षेत्र में विश्व स्तर पर उच्च स्थान बनाने में सफल हो गया है । सड़कों तथा रेलमार्गों का जाल लगभग सम्पूर्ण भारत में फैल गया है तथा इस क्षेत्र में तेजी से कार्य किया जा रहा है । मूलभूत सुविधायें बिजली, पानी, स्वास्थ्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में भारत के प्रत्येक गाँवों तक पहुँचाने की योजनाएँ चलाई जा रही है । शौचालय बनाने का कार्य एक विशेष अभियान के अन्तर्गत तेजी से चल रहा है। चिकित्सा-विश्वद्यालय, चिकित्स-विद्यालय तथा बड़े, छोटे प्रत्येक प्रकार के अस्पताल खोले जा रहे हैं। जिससे भारत के प्रत्येक नागरिक की चिकित्सा हो सके । अस्पतालों में अत्याधुनिक चिकित्सीय मशीनों को लगाने की योजनाएँ तेजी से संचालित की जा रही हैं । भारत की केन्द्र तथा प्रदेशों की सरकारें त्वरित गति से देश के विकास को लक्ष्य तक पहुँचाने के कार्यों में लगे हुए हैं । कार्यों को भूर्तरूप देने में अधिकारी तथा कर्मचारी कितनी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा तथा अच्छी नियत से कार्यों को अन्तिम रुप देते हैं । कार्यों का मूल्यांकन, उसकी गुणवत्ता की परख निरीक्षकों तथा अधिकारियों पर निर्भर है । उपर्युक्त सम्पूर्ण विकास कार्यों में समाज के व्यक्तियों को कितना रोजगार प्राप्त हुआ ? कितने लोगों को लाभ अर्जित हुआ होगा ? कितने लोगों के भूभाग जो सड़कों आदि के बनाने में लग गया, उनको उचित मुआवजा क्या प्राप्त है ? यह सरकार के सांसद विधायक तथा अन्य नेताओं के लिए विचारनीय प्रश्न है ।

भारतवर्ष की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती है । जो कृषक, मजदूर तथा दुग्ध उत्पादन के कार्यों में लगे हैं, उनके ही बच्चे, सैनिक, अध्यापक, तथा अन्य पदों पर देश सेवा में कार्यरत हैं । अब गाँवों के बच्चे भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर अधिकारी, चिकित्सक, इंजीनियर तथा वैज्ञानिक बनकर देश सेवा में संलग्न हैं । गाँवो की जनता के मतों से ही अधिकांश सासंद तथा विधायक चुनकर संसद तथा विधान सभा पहुँचते हैं । परन्तु बहत्तर वर्ष का समय देश को स्वतंत्र हुए बीत गया, गावों के निवासियों में कोई गुणात्मक सुधार तथा विकास नहीं दिखाई देता । जिन्हें थोड़ा भी अवसर मिला वह गाँवों से पलायन कर शहर की ओर दौड़ रहे हैं । क्योंकि यदि मूलभूत सुविधायें उसे गाँवों में प्राप्त होती तो वह शायद पलायन न करते । शौचालयों, कालोनियों का निर्माण कार्य सम्पूर्ण भारत में चल रहा है किन्तु देखना होगा कि क्या सभी पात्रों को उसका लाभ मिला ? क्या यह सब कार्य केवल कागजों तक ही सीमित तो नहीं रह गये ? क्या सरकारें उसकी गुणवत्ता की परख करेगी ।

अब हम गांवों के किसानों, मजदूरों, नारियों तथा बेरोजगारों की दशा पर विचार करेंगे । किसानों के समक्ष अपने फसल सुरक्षा की चिन्ता थी । अब तक किसान मँहगे बीज, खाद, कीटनाशक, जुलाई तथा सिचाई की मँहगाई की भार झेल रहे थे । अब नील गायों (वनरोजो) साड़ों, गावों तथा जंगली सुअरों का भारी आतंक पैदा हो गया है । वे जहाँ किसानों की फसलों को भारी क्षति पहुँचाते हैं वहीं कितने किसानों को घायल कर देते हैं कुछ को तो वे मार ही डालते हैं । किसानो की फसलों की बर्बादी, दुर्दशा, जीवन की असुरक्षा तथा अनाज उत्पादन की कमी की समस्या पैदा हो गई है । किसान कर्ज लेकर कहाँ तक जी सकेगा, अत: अभाव का जीवन जीने को बाध्य है । खेतिहर मजदूर बढ़ते मशीनीकरण से बेरोजगारी का शिकार है । मनरेगा तथा वी० पी० एल० से प्राप्त खाद्यान्न उसके तथा उसके बच्चों को भोजन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधायें नहीं दे सकता । रोगों से ग्रस्त होने पर सरकारी अस्पताल भी दवा एवं चिकित्सक के अभाव में हाथी दाँत सिद्ध हो रहे हैं । बहुत सी सरकारी योजनायें कागजों तक सीमित है । क्या सरकारें इनके लिए कुछ सुदृढ़ कदम उठायेंगी ?

नारियों के सशक्तीकरण की ओर सरकार प्रयत्नशील है, किन्तु नारियों की स्थिति चिन्ताजनक ही नहीं बदतर है । वे अशिक्षा, गरीबी, कुरीतियों, अधिक बच्चे, कुपोषण, एनीमियाँ तथा चिकित्सा का अभाव के कारण दु:खमय जीवन जीने को मजबुर हैं । गाँव हो या शहर दोनों स्थानों पर यह समस्यायें देखी जा सकती हैं । नारियों के तलाक की समस्या सभी जातियो तथा सम्प्रदायों में बढ़ती जा रही है । जो देशवासियों तथा सरकार के लिए शोचनीय, विचारणीय समस्या है । दूसरी तरफ यौन शोषण, बालिग, नाबालिग तथा मासूम बालिकाओं के साथ बलात्कार, देश, समाज तथा सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए अशुभ तथा विनाशक सिद्ध हो रहा है । शायद इसका कारण दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर नारियों के अंगप्रदर्शन, अर्द्धनग्न प्रदर्शन तथा सिनेमा के ऐसे उत्तेजक भोंडा प्रदर्शन ही जिम्मेदार हैं । सरकार को ऐसे अनैतिक, अमर्यादित दृश्यों को दिखाने पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है । देश में अपराधीकरण बढ़ता जा रहा है, कानून भी संसद में बन गया है । परन्तु उसका पालन और प्रभाव व्यवहार में दिखाई नहीं दे रहा है । देश में सरकारी आँकड़ों के अनुसार प्रतिदिन सौ से अधिक बलात्कार के एफ० आई० आर० दर्ज हो रहे हैं किन्तु कितने बलात्कार के अपराध प्रकाश में नहीं आ पा रहे हैं । नारी सशक्तीकरण के लिए शैक्षिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक रुप से सबल बनाना होगा ।

वैदिक काल से महाभारत काल के कुछ बाद तक वैदिक संस्कृति तथा शिक्षा, सभ्यता का प्रभाव भारतीय जनमानस पर रहा । लोगों में सद्विचार, सद्चिन्तन तथा उच्च चरित्र स्पष्ट देखा जा सकता था । कुछ लोग जो कुप्रवृतियों तथा बुरे विचार और आचरण हीन होते थे, उन्हें समाज के लोग समाज

से वहिष्कृत कर देते तथा सामाजिक दण्ड देते थे । सम्पूर्ण देश में वैदिक संस्कृति के मूल्यों की मर्यादा स्थापित थी, जो प्रत्येक नागरिक सम्मान पूर्वक आचरण में लाता तथा नर-नारियों को आदरणीय मानता था । नारी पूर्ण सुरक्षित तथा स्वतंत्रता का अनुभव करती थी । **''यत्र नार्यस्तुपूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।''** का उच्च विचार सम्पूर्ण देश में पालन करने का विधान तथा रिवाज था । माँ, बहिन, बेटी, बुआ, दादी के रूप में मातृशक्तिस्वरूपा देवियों का लोग आदरपूर्वक पूजा करते थे । नारियाँ निर्भय होकर घर-बाहर सर्वत्र आने जाने में किसी प्रकार का भय नहीं करती थी । समाज धार्मिक, नैतिक मूल्यों तथा नियमों में बंधा था । देश में सर्वत्र सद्भाव तथा सम्मान से लोग मैत्रीपूर्ण जीवन जीते थे । वर्तमान समय में इसके विपरीत दिशा में समाज अवनति पथ पर जा रहा है । जो देश तथा समाज के लिए अशुभ ही नहीं पतन के संकेत हैं । क्या कभी सतयुग फिर आयेगा ? क्या राम राज्य की कल्पना कभी साकार होगी? जैसा संत तुलसीदास ने राम राज्य के विषम में लिखा है-

सब मिलि करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति ।
दैहिक, दैविक, भौतिकी तापा । राम राज्य का हुहि नहि व्यापा ।।

वर्तमान युग पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर भौतिकवाद के मकड़जाल में बुरी तरह फँसता जा रहा है । पाश्चात्य रातिरिवाज तथा संस्कृति भारत देश वासियों के लिए भयावह बन गई है । जहाँ साधारण, अशिक्षित तथा कुत्सित विचार के लोग समाज में अनाचरनीय यौनाचार में लिप्त पाये जाते हैं । वहीं उच्च पदों पर आसिन कुछ अधिकारी, सासंद तथा विधायक आदि भी यौनाचार में लिप्त देखे जाते हैं । उच्चतम न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति गण के निर्णय में भी पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है । अभी कुछ दिन पूर्व एक निर्णय आया कि समलैंगिकता अपराध नहीं है, आई० पी० सी० की धारा ३७७ को निरस्त कर दिया गया । उसी के कुछ दिन बाद ही एक निर्णय आया कि आई० पी० सी० की धारा ४९७ को संशोधित करके उसकी मूल भाव को समाप्त कर विदा गया । जिसमें अविवाहित बालिग लड़कियाँ विवाह से पूर्व किसी पूरुष से यौन सम्बंध बना सकती हैं, यह अपराध नहीं होगा । वहीं नारी की स्वतंत्रता तथा समानता के अधिकार के नाम पर विवाहित नारी किसी पर पुरुष से यौन सम्बंध बनाती है तो वह भी अपराध नहीं होगा । क्या यही नारी सशक्तिकरण है ? यह भारतीय संस्कृति सभ्यता तथा मर्यादा पर प्रहार है । समाज के कुछ तत्व पहले से ही आचरणहीन बनकर उदाहरण बनते जा रहे हैं, अब स्वतंत्रता पूर्वक अनैतिकता तथा अपराध करे उन पर कोई अंकुश नहीं । देश के साधु, संत, मोलवी, पादरी तथा धर्म के ठेकेदार पहले से ही पौनाचार में लिप्त हैं कई जेलों में भेजे जा चुके हैं । उक्त निर्णय से अपराधों में वृद्धि होने के संकेत हैं । यह नहीं भूलना चाहिए कि नारी ममतामयी माँ स्नेहमयी भगिनी और पति परायण पत्नी है उसकी गरिमा, मर्यादा तथा स्वाभिमान

को किसी प्रकार से नष्ट नहीं होना चाहिए ।

अग्रेजी सरकार ने अपने शासन काल में भारतीय संस्कृति के मूल्यों, धार्मिक आदर्शों तथा वैदिक मान्यताओं भारतीय नारी गरिमा के महत्व को समझा तथा उसी के अनुरुप आई० पी० सी० तथा सी० आर० पी० सी० की इन धाराओं का निर्माण करके भारतीय संस्कृति को सम्मान दिया । किन्तु कुछ सिरफिरे लोगों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करके चुनौती दिया कि अमुक धारायें हमारी स्वतंत्रता एवं समानता के अधिकार का हनन करती हैं । माननीय सुप्रीमकोर्ट ने मुट्ठी भर लोगों क़ी आकांक्षा की पूर्ति तो एक तरफा अवश्य कर दिया किन्तु भारतीय संस्कृति के मूल्यों, मानवता के आदर्शों तथा धार्मिक संस्कारों एवं मान्यताओं का तो गला घोट दिया । जिससे करोड़ों लोगों की अस्मिता, मर्यादा तथा अस्तित्व को भारी आघात लगा । जिन आचरणों को भारतीय समाज हजारों वर्षों से निकृष्ट, चरित्रहीनता, अमानवीय तथा अनाचरणीय, अपराध मानता आया है । जो भारतीय समाज में निकृष्टतम आचरण माना जाता है, जिसे हेय दृष्टि से देखते हैं । माननीय सुप्रीम कोर्ट के उक्त निर्णय से अगामी वर्षों में भयंकर परिणाम भारतीय समाज को भोगना होगा । भारतीय समाज अब पाश्चात्य देशों की तरह बहुविवाद, तलाक स्वेक्षा से प्रतिदिन विवाह, प्रतिदिन तलाक आदि भ्रष्ट कृत्य का शिकार हो जायेगा । सम्पूर्ण भारत भ्रष्टाचरण का केन्द्र बनकर, प्राकृतिक, अप्राकृतिक यौनाचार का बड़ा अड्डा बनेगा । जहाँ पर भयंकर से भयंकर रोगों का बोल वाला होगा । वैसे ही एड्स आदि भयंकर रोगों का प्रचलन हो रहा है । अब यह अनियंत्रित ढ़ग से बढ़ेंगे तथा भारतीय समाज के अशिक्षित, उन्मादी नर-नारियों को वर्वाद करके समाज नष्ट कर देंगे । भारतीय समाज में एक विवाह का प्रचलन था जो आजीवन के लिए हुआ करता था । अशिव चिन्तन कभी शिव नहीं बन सकता । देश में माहिला सशक्तीकरण उनके अधिकारों तथा सम्मान आदि की रक्षा होनी चाहिए, परन्तु मर्यादा तथा सीमा के अन्दर जिससे नारी गरिमा बनी रहे ।

अभिनव भारतीय समाज की दशा तथा दिशा में समग्र क्रान्तिकारी परिवर्तन की महान आवश्यकता है । सम्पूर्ण भारतीय समाज के कल्याण, प्रगति तथा मूलभूत आवश्यकताओं के लिए सरकार को ठोस कदम उठाना चाहिए । सभी देशवासियों को बिना भेदभाव के उनकी स्वतंत्रता, समानता तथा अधिकारों को न्यायोचित ढंग से मिलना चाहिए । उनकी भेदभाव रहित होकर रक्षा करना चाहिए । देशवासी आज गरीबी, मँहगाई, बेरोज़गारी, जर्जरित विदेशी शिक्षा व्यवस्था, नारी, बच्चों के पोषण, अपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं से ग्रसित है । महिला सशक्तिकरण, जातिवादी उन्माद तथा साम्प्रदायिक कट्टरवाद के नाम पर समाज को अनैतिकता, अमानुसिकता तथा भ्रष्टाचार के गहरे गड्ढे में नहीं झोंका जाना चाहिए । आज सर्वत्र लोगों में कर्तव्यों की उपेक्षा तथा अधिकारों के प्रति अधिक आकांक्षा तथा उत्सुकता बढ़ी है ।

समाज नशाखोरी, निष्क्रियता, अर्कमण्यता, निठल्लापन, आलस्य तथा अपराधी प्रवृत्ति में आकण्ठ लिप्त होता जा रहा है । ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए सरकारों, बुद्धिजीवियों और समाज सुधारकों को ठोस कदम उठाना अपेक्षित है । क्या राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्ति कुछ दिशा दिखा सकेगी -

''हम क्या थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी''।

किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता देश, समाज के लिए मेरुदण्ड होती है । यदि संस्कृति और सभ्यता नष्ट हो गये तो देश एवं समाज को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकेगा । सरकार तथा देश वासियों को सावधानी से अपनी संस्कृति के मूल मान्यताओं की रक्षा करने के लिए आगे आना होगा । अत: सांस्कृति मूल्यों, सभ्यता की मान्यताओं तथा धार्मिक उच्चार्दशों को सुरक्षित रखने के लिए भारतीय देशवासियों को संकल्प लेना होगा । श्रेष्ठ विचार जहाँ मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है वहीं निकृष्ट विचार मनुष्य को निकृष्ट बना देता है ।

म० न० २४७५
निराला नगर (शिवपुरी)
सुल्तानपुर, उ०प्र०

प्रवेश सूचना

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर

सम्बद्ध - गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सत्र- २०१९-२०

कक्षा- ६वीं, ७वीं, ८वीं, ९वीं, ११वीं, और बी० ए० प्रथम वर्ष

प्रवेश परीक्षा - *०७ अप्रैल २०१९ प्रात: १० बजे*

विशेष :- आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत को मुख्यविषय के रुप में पढ़ाया जाता है ।

आर्यवीर दल उ० प्र० द्वारा आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, तपोनिष्ठ गुरुकुल कालवा के संस्थापक आचार्य बलदेव जी की स्मृति में दूसरी बार अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन १० जनवरी, २०१९ को किया गया । प्रतियोगिता को सहपुस्तक परीक्षा के रूप में आयोजित किया गया । ताकि प्रतिभागीगण सत्यार्थ प्रकाश का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर सके । यह परीक्षा देशभर के १०८ जनपदों में १८२ केंद्रो पर अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई । इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को प्रोत्साहन हेतु मोटर साईकिल जैसे बड़े पुरस्कारों सहित १००१ पुरस्कार दिया जाना निश्चित किया गया है । प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम १० मार्च २०१९ रविवार को अलीगढ़ स्थित सिद्धि विनायक फार्म हाउस, नांदापुल खैर रोड़ पर ५१ कुण्डीय स्वयं कल्याण यज्ञ के साथ आयोजित किया जायेगा ।

शास्त्रार्थ और शास्त्रविचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रचार-कार्यक्रमों में शास्त्रार्थ-विचार-विनिमय, वार्तालाप, शंका-समाधान की प्रक्रिया को बहुत अधिक अपनाया था । ग्रंथ लिखने और अपने विचारों को स्थायी रूप से छोड़ जाने की भावना का इतिहास तो कलकत्ता से लौटने के पश्चात् आरम्भ होता है । स्वाभाविक भी था कि जब स्वामी दयानन्द खण्डन के कठोर धरातल पर खड़े होकर प्रचार करते थे तो जिनको चोट लगती थी वे कभी शास्त्रार्थ, कभी वार्तालाप और कभी हुल्लड़बाजी का सहारा लेते थे । स्वामी दयानन्द की शास्त्रार्थ-पद्धति प्राचीन ढर्रे की शास्त्रार्थ प्रणाली ही थी जो समय की गति के साथ विवाद-सभाओं के रूप में भी परिवर्तित हो गयी थी । स्वामीजी के शास्त्रार्थ कोई अपनी विद्या या सम्मान की प्रतिष्ठा के लिए न होते थे, बल्कि शीघ्रता से सत्य का प्रकाश हो जाय और जनसाधारण सत्य सिद्धान्तों की ओर सरलता से आकृष्ट हो जाय, यह उनका अभीष्ट था । चुभता हुआ खण्डन तो इसलिए करते हुए प्रतीत होते हैं कि नरम-नरम, प्यारी-प्यारी बातें सुनकर साधारण जनता में अनसुना कर देने की प्रवृत्ति होती है । स्वामी दयानन्दजी के कठोर-निर्मम खण्डनों के पीछे परम हितैषी समाज-सुधारक का हृदय सर्वत्र झांकता रहता है, भले ही प्रतिद्वन्दी विद्वानों को ऋषि दयानन्द की शास्तार्थ सरणि में गर्व, अभिमान, दर्प, प्रतिष्ठा, विजय की महत्वाकांक्षा इत्यादि दिखायी पड़ती है, किन्तु स्वामी दयानन्द यावज्जीवन सत्य और धर्म के प्रचार के लिए ही सब कुछ करते रहे ।

आर्य समाज को अपनी प्रचार-प्रणाली स्वामी दयानन्द से ही दायभाग के रूप में प्राप्त हुई । आर्य समाजी पण्डितों ने व्याख्यान दिये, अन्य लिखे, पत्रों का प्रकाशन किया इत्यादि । भारतवर्ष में मन्चों वाली सभाएँ और व्याख्यान-कला का जितना विकास आर्य समाज ने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए किया, सम्भवतः अन्य किसी संस्था ने सभा-संयोजन-कला का इतना सफल प्रयोग नहीं किया है । सभाओं में सिद्धान्त-प्रतिपादन 'आध्यात्मिक प्रवचन' के साथ खण्डनात्मक व्याख्यान प्रायः होते ही रहते थे, उनका अनिवार्य परिणाम शास्त्रार्थ, शास्त्र-विचार, शंका-समाधान आदि हुआ करते थे । बंगाल में भी कई बार अच्छे शास्त्रार्थों का संयोजन हुआ था । कलकत्ता उस समय केवल भारत की राजधानी ही नहीं थी, अपितु यह नगर विद्या और व्यवसाय का भी केन्द्र था । यहाँ अंग्रेजी और संस्कृत दोनों विद्याओं के पठन-पाठन के सुन्दर सुव्यवस्थित केन्द्र थे । संस्कृत के पण्डितों की गद्दियाँ तो थी ही, अपने ढंग का अनूठा संस्कृत कालेज भी यहाँ था । उधर नदिया, शान्तीपुर और भाटपाड़ा भी संस्कृत पण्डितों के केन्द्र थे । यहाँ साम्प्रदायिक रूप में काली के उपासक लोग तो रहे ही हैं, वैष्णव भी पर्याप्त सबल रहे हैं । आर्य समाज के साथ वैदिक सिद्धान्तों की टक्कर होने पर ये सारे सम्प्रदाय एक पौराणिक गढ़ के समन्वित स्वरूप में एकत्र होकर आर्य समाज के विरुद्ध सम्मुखीन हो जाते थे ।

शास्त्रार्थ या शास्त्र-विचार की कला पौराणिक पण्डितों में पर्याप्त विकसित थी और नव्य न्याय को अधार बनाकर शास्त्रार्थ करने की एक विचित्र शैली प्रयुक्त हो रही थी । स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी

को, और उनके पश्चात् आर्य समाज के प्रचारक विद्वान् पण्डितों को इन सब परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था।

स्वामी दयानन्दजी बंगाल में सन् १८७२ ई० के दिसम्बर मास में आये थे और लगभग चार महीने रहकर सन् १९७३ ई० गये थे। आर्य समाज के शास्त्रार्थ और शास्त्र विचार का युग यहाँ के इतिहास की दृष्टि से तभी से आरम्भ हो जाता है। कलकत्ता में स्वामीजी के साथ शास्त्र-विचार तो नित्य ही हुआ करता था, कुछ महत्वपूर्ण चर्चाएँ इतिहास के रूप में स्मरणीय हैं। इतिहास की दृष्टि से न भूलने योग्य शास्त्र विचार श्री पं० हेमचन्द्र चक्रवर्ती के साथ हुआ था। पीछे तो पं० हेमचन्द्रजी चक्रवर्ती उनके भक्त बन गये और इन्होंने स्वामीजी से उपनिषद् इत्यादि पढ़ी भी। हम हेमचन्द्रजी के साथ स्वामी जी के शास्त्र-विचारों को एक सहृदय ब्राह्मविद्वान् का शंका-समाधान कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं। वैसे पण्डित हेमचन्द्रजी चक्रवर्ती ब्रह्म समाज के उपदेशक थे और उस समय ब्रह्मसमाज में वर्णव्यवस्था, यज्ञोपवीत, ईश्वर-उपासना का स्वरूप इत्यादि पर बड़ा निर्णायक विवाद चल रहा था और स्वामी दयानन्दजी ने हेमचन्द्रजी को वैदिक मन्तव्यों से अवगत कराया और कई प्रकार के वैदिक सिद्धान्तों की आस्था उनके हृदय में दृढ़ कर दी।

बाबू केशवचन्द्र सेन के साथ पुनर्जन्म पर शास्त्रार्थ हुआ था और 'होम करना मूर्तिपूजा नहीं है, इस विषय पर श्री राजनारायण बसु से भी शास्त्रार्थ हुआ था। ये शास्त्रार्थ कम, शास्त्र-विचार अधिक थे, क्योंकि बाबू केशवचन्द्र सेन या श्री राजनारायण बसु या अन्य और लोग भी कोई लाग डांट प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर इन शास्त्रार्थों में नहीं आते थे, बल्कि सुलझे हुए महा विद्वान् संन्यासी से वार्तालाप करने और समझने की दृष्टि से आते थे। यद्यपि किसी पत्रकार ने स्वामी दयानन्द की इस यात्रा को शंकराचार्य की तरह दिग्विजय का रूप दिया था, किन्तु सामान्य धारणा यही थी कि स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचारक और सत्य के आग्रही हैं। इण्डियन मिरर १२ जनवरी सन् १८८३ ई० में एक सूचना छपी।'

''पण्डित दयानन्द सरस्वती यह बड़ा विद्वान् पण्डित पिछले बृहस्पतिवार को एशियाटिक म्यूजियम में विशेषतया इस अभिप्राय से गया कि वेद और उपनिषदों की कुछ प्रतियाँ खरीदें और उसके पश्चात् बाबू केशवचन्द्र सेन के घर पर बहुत से ब्रह्मसमाजियों से मिला और उनके प्रश्नों के उत्तर में अपने वैदिक सिद्धान्त वर्णन किये। हम आशा करते हैं कि इन पण्डितजी के मँजे-सुलझे हुए विचारों को छोटे-छोटे ट्रैक्टों द्वारा प्रकाशित करने के लिए एक सभा स्थापित की जायेगी।''

यह सूचना स्वामी दयानन्द के शास्त्रार्थ-विचार का उद्देश्य सुस्पष्ट घोषित करती है। स्वामीजी शास्त्र-विचार तो करते ही रहे, किन्तु इस यात्रा में पण्डित ताराचन्द्रजी के साथ हुगली में बड़ा प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। हुगली में पादरी लालबिहारी दे के साथ भी शास्त्रार्थ हुआ था। यहाँ वर्णव्यवस्था, वर्णभेद पर विचार हुआ था। पादरीजी के ध्यान में वर्णव्यवस्था का पौराणिक स्वरूप को समझकर उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली थी।

(आर्य समाज कलकत्ता के शत्तवर्षीय इतिहास से)

(पृष्ठ २ का शेषांष)

२. भारत में पल रहे आतंकवादियों के समर्थकों और सहयोगियों को चिन्हित कर उन्हें समूल नष्ट किया जाये ।

३. अमर सैनिकों के परिवारों को सहायता प्रदान करते हुए स्थायी रूप से प्रधानमंत्री सहायता कोष का निर्माण किया जाये जिसमें भारतवासी उस कोष में सीधे अपनी सहयोग राशि स्थानान्तरित कर सकें ।

उपर्युक्त बिंदुओं पर आप द्वारा अविलम्ब कार्यवाही की अपेक्षा करते हुए श्रद्धांजलि सभा का समापन दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगत अमर सैनिकों को शांति एवं संगति तथा शोक संतप्त परिवारों और भारतवासियों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गयी ।

भवदीय
आर्य समाज कलकत्ता
मनीराम आर्य

भवदीय
मदनलाल सेठ
मंत्री

शुद्धि समाचार

१. नेहा परवीन आयु २२ वर्ष ने दिनांक १६-११-२०१८ को आर्य समाज कलकत्ता में स्वेच्छा से इस्लाम मत त्याग कर वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम नेहा चक्रवर्ती रखा गया।

२. रेहाना खातून आयु १९ वर्ष ने दिनांक को आर्य समाज कलकत्ता में स्वेच्छा से इस्लाम मत त्याग कर वैदिक धर्म अंगीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अर्पिता मिश्रा रखा गया ।

३. सबह भट्ट आयु २६ वर्ष ने दिनांक १९-११-२०१८ को आर्य समाज कलकत्ता में स्वेच्छा से इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अन्तरा चटर्जी रखा गया ।

४. नूरखातून आयु २३ वर्ष ने दिनांक २६-१२-२०१८ को आर्य समाज कलकत्ता में स्वेच्छा से इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अनिमा पासवान रखा गया।

५. थुपडेन ल्हामा शेरपा आयु २८ वर्ष ने १४-०१-२०१९ को आर्य समाज कलकत्ता में स्वेच्छा से बौद्धमत त्यागकर वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ ।

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित ।